
हमारे बापू
कुमुद

हमारे बापू

लेखक—

ए० आर० कुमुद

प्रकाशक—
ग्रन्थागार, साकची, जमशेदपुर।

प्रथम बार] १९४६ [मूल्य ।।)

प्रकाशक —

ग्रन्थागार साक्ची

जमशेदपुर ।

मुद्रक—

परमानन्द पोद्दार,

यूनाइटेड कमर्शियल प्रेस,

३२, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,

कलकत्ता ।

हमारे बापू



हिम्मत न हार बन्दे

प्रतीक्षामें ही सारा दिन बीत जाता।

बैरिष्टरी पास करके विलायतसे लौट भी आए, पर कोई मुकदमा ही नहीं मिलता और सारा दिन हाथपर हाथ धरे बैठे रहते।

और, फिर एक दिन अकस्मात् ही एक केस मिल गया! बड़ी प्रसन्नता हुई। पहला मुकदमा हाथमें आया। फीस भी तय हो गई, कुल मिलाकर तीस रुपए।

मामूली सा मुकदमा था तो क्या हुआ, पर पहला जो भी तो था! पहले मुकदमेमें बैरिष्टर साहब जीत गए तो मैदान साफ ही समझो। कानूनकी मोटी-मोटी किताबोंके पन्नेपर पन्ने उलटने लगे। सारा दिन तैयारीमें ही बिता दिया। बड़ी मेहनत की बैरिष्टर साहबने।

दूसरा दिन आया। कचहरी जा पहुंचे मुकदमा लड़नेके लिये। किन्तु कोर्टमें पहुंचते ही मुसीबत पड़ गई विचारे बैरिष्टर साहबपर। वादीसे ज़िरह करनेके लिये उठते ही पैर काँपने लगे, आँखोंके

सामने अँधेरा सा छा गया, सिर चकराने लगा। बहुत चेष्टा करने पर भी मुँहसे आवाज़ नहीं निकली, मानों लकवा मार गया हो। घबराये।

और बैरिष्टर साहब धम्से बैठ गए कुर्सीपर। इतने लोगोंके सामने बोलें तो कैसे? साहस ही नहीं हुआ!

चुपचाप बाहर आ गये कचहरीसे। जज साहब हँसे, वकील हँसे, मुवक्किल झुँझलाये और बैरिष्टर साहब, रोये!

दुःखित होकर बैरिष्टर साहबने एक स्कूलमें मास्टरीके लिये दरख्वास्त भेज दी।

दैनिक पत्रोंमें विज्ञापन छपा थाः—

"हाई स्कूलमें अँग्रेजी पढ़ानेके लिए एक सुयोग्य अध्यापककी आवश्यकता है। वेतन पचहत्तर रूपए।"

बैरिष्टर साहबकी दरख्वास्त पाकर तत्काल ही उन्हें बुलाया गया। स्कूल कमेटीके चेयरमैनने पूछा, आपने बी० ए० पास किया है?

—नहीं।

—फिर तो मुश्किल है।

—पर साहब सुनिये तो सही। मैंने भारतके किसी विद्यालय से बी० ए० पास नहीं किया तो क्या हुआ ! लन्दनमें शिक्षा पाई है। अंग्रेजीमें मैं किसी बी० ए० पाससे कम नहीं। आप यदि चाहें तो, मैं बड़ी प्रसन्नतासे परीक्षा देनेके लिये तैयार हूँ। इतना ही नहीं, अंग्रेजीके अतिरिक्त लेटिन भी जानता हूं।

—अफसोस है, हमें तो ग्रेजुएट ही चाहिये।

करारा सा जवाब मिल गया। हताश होकर बिचारे बैरिष्टर साहब लौट आए।

जब भारतमें कोई रोजगार नहीं मिला तो एक दिन बैरिष्टर साहब चल पड़े दक्षिण अफ्रीकाकी ओर !

समझे, यह थे हमारे बापू, मोहनदास करमचन्द गांधी।

जाको राखे साइयाँ, मार न सकहिं कोय

दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले भारतीयोंपर आज भी गोरोंके अत्याचार और अनाचारकी कोई सीमा नहीं। एक बार गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे भारतवर्ष आए। यहाँ कुछ दिन ठहरनेके बाद उन्हें फिर वापस जाना पड़ा। इनके साथ ही एक दूसरे जहाजमें ६०० भारतीय भी दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे।

जहाज डरबन बन्दरगाहपर आ लगा। उसी समय पता चला कि नेटालके गोरोंने निश्चित किया है गांधीको उतरने नहीं देंगे; उतरते ही मारकर फेंक देंगे। गांधी, क्या उतरोगे जहाजपरसे? इन गोरोंके आक्रमणसे अब यहाँ तुम्हारी रक्षा कौन करेगा? किन्तु गांधीका अपराध, वे भारतवर्ष और संसारको परिचित करा चुके थे कि दक्षिण अफ्रीकामें गोरोंने भारतीयोंकी क्या दुर्दशा कर रखी है।

गांधीजी डरे नहीं, वे उतर पड़े। साथ ही एक अंग्रेज मित्र भी थे। गोरोंने घेर लिया। उनकी पगड़ी फेंक दी गई, फिर गांधीजीपर प्रहार शुरू हो गया; ईंट, पत्थर, थप्पड़, मुक्का, कील

और लाठी पड़ने लगी। गांधीजी करीब-करीब बेहोश हो चुके थे। सांपके विषको दूर करने की दवा भी जहरीली ही होती है। गांधी का अपने अंग्रेज साथीसे भी साथ छूट गया था। ईश्वरने ऐसे समयमें उनकी रक्षा की। इसी समय वहाँके पुलिस सुपरिंटेण्डेंट मि० अलेक्जेण्डर साहबकी पत्नीने अपने बंगलेसे यह क्रूर व्यवहार देखा। उनसे यह देखा न गया और आकर छातेकी आड़से उनकी रक्षा की। तबतक पुलिस भी आ गई; उन्होंने बड़ी मुश्किलसे गांधीजीको उनके मित्र रुस्तमजीके घर पहुंचा दिया। यह खबर मिलते ही उन्मत्त गोरोंकी भीड़ने घरको चारों ओरसे घेर लिया, वे चिल्ला रहे थे, "गांधीको हमें दे दो।" किन्तु समय पाकर पुलिस सुपरिंटेण्डेंटके अनुरोधसे गांधीजी सिपाहीकी वर्दी पहनकर किसी प्रकार वहाँसे निकल भागे। पिछले दरवाजेसे गांधीजी जिस समय भाग रहे थे, उसी समय घरके सामने पुलिस सुपरिंटेण्डेंट गोरोंको भुलानेमें लगे हुए थे, वे गा रहे थे—

Hang old Gandhi
On The sour-apple tree.

(लटका दो बूढ़े गांधीको खट्टे सेवके पेड़पर)

जब गांधीजी थानेमें पहुंच गये तब उन्होंने दो सिपाही

गांधीजीको खोजनेके लिए मकानके अन्दर भेजे; आकर उन्होंने खबर दी कि असामी लापता है।

इस प्रकार पुलिस सुपरिंटेण्डेंटके कौशलसे उनकी रक्षा हुई। किन्तु आश्चर्यका विषय है कि गांधीजीने किसीके भी विरुद्ध नालिश नहीं की। जिन्होंने उन्हें मार डालनेकी चेष्टा की उनको गांधीजीने प्रसन्नतापूर्वक क्षमा कर दिया। सारी दुनिया अवाक् रह गई।

धन्य है बापूकी दयालुता।

बापूका आश्रम

गांधीजीके आश्रममें कैसे-कैसे लोग रहते हैं, यह जानकर तुम चकित रह जाओगे।

मीरा बेटनका नाम तुम लोगोंने अवश्य ही सुना होगा। वे अंग्रेज हैं तथा उनका असली नाम मिस स्लेड है। मीरा बेटन एक धनी एडमीरलकी कन्या हैं। भारत और गांधीजीके प्रति उनकी अपार भक्ति और असीम श्रद्धा है। उनकी पोशाक भारतीय है और भारतीय स्त्रियोंकी तरह साड़ी पहनती हैं। गांधीजीका भोजन मीरा बेटन पकाती थीं। मीरा बेटन बड़ी ही सुन्दर हिन्दी बोलती और लिखती हैं। उन्होंने भारतकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की है और सारा जीवन इसी पुण्य-कार्यमें व्यतीत करेंगी।

हिमालयकी दुर्गम चोटियों और बीहड़ जंगलोंमें रहनेवाले नागा साधूकी भाँति जीवन व्यतीत करनेवाले प्रोफेसर भंसाली जैसे सुयोग्य विद्वान पंडित भी गांधीजीके आश्रममें थे। अष्ठी-चिमूरके सरकारी अत्याचारका प्रतिवाद करनेके लिये इन्होंने

अनशन किया था। इनका भोजन केवल नीमकी पत्ती है। गांधीजीके आश्रममें आनेके बाद इन्होंने मौनव्रत धारण करनेका निश्चय किया। जो ठान लिया उसे तो करना ही है। बस, अपने दोनों होंठ ही सिलाई कर लिए। नलकीसे नीमका रस पीनेके सिर्फ एक फाँक छोड़ दी। एकबार गांधीजीसे बोले, "बापूजी, मुझे कुछ काम दीजिये।" गांधीजीने उन्हें चरखा चलानेके लिए कहा और वे सारा दिन रात्रितक चरखा चलाकर सूत कातने लगे। अब तो वे बातचीत भी करते हैं। आश्रमवासियोंको पढ़ानेका भार इनपर था।

एक जापानी साधु भी कुछ दिनोंतक गांधीजीके आश्रममें रहे। टट्टी साफ करनेके कामसे लेकर अन्य सभी काम वे करते थे। प्रातः-सायं नियमपूर्वक वे अपना जापानी घंटा टन्-टन् करके बजाया करते थे। बहुतेरे तो गुप्तचर समझकर उनपर सन्देह भी करते थे, किन्तु वास्तवमें वे थे महात्मा गांधीके एक सच्चे अहिंसाव्रती शिष्य।

संन्यासी भारतानन्दके नामसे कुछ दिनोंतक एक यूरोपियन इञ्जीनियर भी गांधीजीके आश्रममें रह चुके हैं। कई विदेशी नर-नारियोंने भी समय-समयपर गांधीजीके आश्रममें निवास

किया है। कितने ही लोगोंने आदर्शके लिये सर्वस्व त्यागकर गांधीजीका पथ चुना।

एक बार एक कुष्ठ रोगीने आकर गांधीजीसे कहा, "मैं आपके आश्रममें रहना चाहता हूं; यहीं मैं मरूंगा।" किसी प्रकारकी आनाकानी किए बिना ही गांधीजी बोले, खुशीसे! पर मेरे नहीं रहनेपर तुम्हारी देख-भाल कौन करेगा? अपने कष्टका कुछ ख्याल कर गांधीजी इसी प्रकार कई असहाय मनुष्योंको अपने आश्रममें आश्रय देते थे। कई बार तो उन्हें तथा माता कस्तूरबाको अपना निजी घर भी दूसरोंके रहनेके लिए खाली करना पड़ा था। चाहे कितना कष्ट ही क्यों न सहना पड़े।

गांधीजीकी दिनचर्या

तुमलोग यह भी जानना चाहोगे कि गांधीजी किस प्रकार अपना दिन व्यतीत करते थे।

गांधीजी नियम-पालनमें बड़े सख्त थे। वे अपने साथ हमेशा घड़ी रखते थे। वे ब्राह्म-बेलामें ठीक चार बजे उठ जाते थे। इस विषयमें कभी भी हेर-फेर नहीं होता था। शौच आदिसे निपटकर वे मुँह-हाथ धोनेके बाद स्नान कर प्रार्थना करते थे। उनकी प्रार्थनाके समय कई लोग इकट्ठे होकर उनके साथ ही प्रार्थना करते थे। इनकी प्रार्थनामें प्रत्येक मनुष्य चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या ईसाई, सभी धर्म और वर्ण भेद भुलाकर सम्मिलित होते थे। प्रार्थनाके बाद भजन-कीर्तन होता था। तत्पश्चात् गांधीजी कुछ उपदेश करते थे।

प्रार्थनाके बाद वे कुछ देर टहलते थे। इस समय वे बड़ी तेजीसे चलते थे, इससे व्यायाम भी हो जाता था।

जब गांधीजी घूमने निकलते तब कई लोग उनके साथ हो

लेते थे। आश्रममें यदि कोई रोगी हुआ तो लौटते हुए गांधीजी उसे भी देखते थे।

लौटकर आनेके बाद लोगोंसे बातचीत करनेमें कुछ समय चला जाता था, इसके बाद फिर लिखने बैठ जाते थे।

गांधीजी जो कुछ भी लिखते थे उसे एक बार दुहराये बिना नहीं देते थे। कुर्सी-मेजपर तो वे लिखते नहीं थे। लिखनेके समय पैरके घुटनेपर कोई मोटी सी कापी या रजिस्टर नीचे रख ऊपर कागज़ रखकर लिखते थे। गांधीजीकी लिखावट अच्छी नहीं थी, फिर भी पढ़ी जा सकती थी। एक मजेकी बात सुनो, गांधीजीके लिखनेपर। जिस प्रकार रफ्तारके साथ वे दाहिने हाथसे लिखते थे वैसे ही रफ्तारके साथ वे अपने बायें हाथसे भी लिख सकते थे। एक बार उनके दाहिने हाथमें कुछ तकलीफ हो गई थी इसी बीच उन्होंने बाएँ हाथसे लिखनेका अभ्यास किया। रातका भोजन गांधीजी सन्ध्या होनेसे पहले ही खा लिया करते थे। खानेके बाद फिर सैरके लिये जाते थे।

गांधीजी अपने दिन भरके कामपर सोनेसे पहले एक बार विचार करते थे कि दिन किस प्रकार कटा। प्रत्येक कामके लिये समय निश्चित कर रखा था। उन्होंने जो कि किसी

कारणवश भी नहीं बदलता था। भोजनका समय भी निश्चित था। एक बार वायसरायके साथ बड़ी ही ज़रूरी बातें हो रही थीं, इसी बीच उनके खानेका समय हो गया; तब बात-चीतके दौरानमें ही उन्होंने भोजन कर लिया।

गांधीजी प्रतिदिन नियमपूर्वक कुछ देरतक चरखा चलाते थे। उनकी प्रतिज्ञा थी कि वे प्रति दिन १६० तार अर्थात् २१५ गज सूत कातेंगे।

सन्ध्या समय सात बजे सांध्य प्रार्थना आरम्भ होती थी। वैसे तो ठीक नौ बजे गांधीजीके सोनेका समय था। किन्तु दिन भर काममें व्यस्त रहनेके पश्चात् भी जब काम पूरा नहीं होता, तब सोनेमें देर हो जाती थी। किन्तु फिर भी चार बजे अवश्य ही उठ जाते थे।

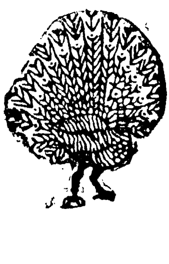
गांधीजीमें एक आश्चर्यजनक विशेषता यह थी, जब भी, और कहीं भी, जितनी देर चाहें वे सो लेते थे। जितनी नींद उन्हें चाहिये थी ठीक उतनी देर सोकर वे फिर उठकर अपने कार्यमें व्यस्त हो जाते थे।

गांधीजीकी हँसी बड़ी प्रसिद्ध थी। वे बहुत जोरसे हँसते थे।

गांधीजीको छोटे-छोटे बच्चोंसे बड़ा प्रेम था। बच्चे जब उनके पास आते थे तब वृद्ध महात्माजी उन्हींके हो जाते थे। पण्डित जवाहरलाल नेहरूजीकी सुपुत्री इन्दिराके चिरंजीवि पुत्र राजीव गांधीजीको देखकर ही बोल उठा—"बापू दी दय हिंद।"

गांधीजीने हाथ बढ़ाकर उसे गोदमें ले लिया और खिल-खिलाते हुए बोले, "जयहिन्द"। बच्चे उन्हें अत्यन्त प्रिय थे। उनसे अधिक प्रिय, उनसे अधिक पवित्र और उनसे अधिक सुन्दर और है क्या ?

प्रत्येक सोमवारको गांधीजी मौन रहते थे, उस दिन मुँह-से कुछ नहीं बोलते थे। कोई अत्यन्त आवश्यकता पड़नेपर लिख देते थे, पर मुँहसे बात नहीं। यह भी उनकी एक प्रतिज्ञा थी, किसी कारणवश भी यह प्रतिज्ञा नहीं टूटती थी। इस विषयमें गांधीजीका कथन था कि हम आवश्यकतासे अधिक बोलते हैं; इससे शक्तिका ह्रास होता है।



प्रेमके वशमें क्रोध

प्रायः तीस वर्ष पहलेकी बात है, गांधीजी पहली बार कलकत्ता गये। उस समय वे दक्षिण अफ्रीकासे लौटे थे तथा बहुत कम लोग ही उन्हें पहचानते थे।

उसी समयकी एक घटना बड़ी मजेदार है। महामति गोखले उन दिनों कलकत्तके बड़ा बाजारमें रहते थे, गांधीजी उन्हींके निवास-स्थानपर ठहरे। एक दिन गोखलेजीने एक बङ्गाली सज्जनको बुलाकर कहा, "मेरे इस मित्रको आप कलकत्ता दिखा लाइये, जो कुछ दर्शनीय है सब दिखा देंगे।"

वे महाशय गांधीजीको पहचानते नहीं थे। दक्षिण अफ्रीकामें वीरता एवं महत्वपूर्ण कामको करनेवाले, मैले कपड़े पहने, नंगे पैर, माथेमें टीका लगाये, देखनेमें अत्यन्त साधारण यह पुरुष ही गांधीजी हैं, इसकी उस महाशयने कल्पना भी नहीं की थी। यह आदमी अंग्रेजी नहीं जानता है, बंगाली साथीने मुँह देखकर ही समझ लिया। टूटी-फूटी हिन्दी ही में वे चिड़िया-घर, पारसनाथका मन्दिर, विक्टोरिया मेमोरियल आदिकी बातें समझाने लगे।

ट्राममें बैठकर जब वापस लौट रहे थे तब एक घटना हो गई। गांधीजीके सामने एक साहब बैठे थे। उन्होंने जूते समेत अपना पैर गांधीजीकी बेंचके ऊपर रख दिया। उन्होंने भी धूलसे सने अपने नंगे पैर साहबकी बेंचपर रख दिये। क्रोधसे तमतमाते हुए साहबने गांधीजीको एक धौल जमा दी। अब क्या था, ट्रामके सभी लोग बिगड़ खड़े हुए साहबको पीटने के लिये ! बंगाली महाशय तो इस बुड्ढ-से गुजरातीका साहस देखकर अवाक रह गये। मार-पीट रोकनेकी कोशिश करते हुए सबोंसे गांधीजीने अंग्रेजीमें कहा, "क्षमा ही परम धर्म है। क्रोधको प्रेमके वशमें करना चाहिये। साहबको आप लोग छोड़ दें।" और इधर गांधीजीके मुँहसे ऐसी सुन्दर और ललित अंग्रेजी सुनकर बंगाली साथीकी तो टकटकी बंध गई। इतनी देर तक क्या बुड्ढ ही बना रहा। इसी बीच कइयोंने पहचान लिया कि ये ही गांधीजी हैं। साहबने अपने अभद्र व्यवहारके लिये क्षमा मांगी और सभी लोग पड़ गये इस महामानवके चरणोंपर।

———

तीसरे दर्जेमें

गांधीजीने सारे भारतवर्षकी अनेकों यात्रायें की थीं। रेलमें उनका बहुतसा समय कटा। गांधीजीने पहले-पहल सन् १६०२ में तीसरे दर्जेमें यात्रा की। तीसरे दर्जेमें यात्रा करनेसे देशकी अवस्था भलीभाँति जानी जा सकती है। गांधीजीने कहा, जिनकी मैं सेवा करना चाहता हूं, वे जिस दर्जेमें यात्रा करते हैं उससे ऊपरके दर्जेमें यात्रा करना अनुचित है।

तीसरे दर्जेमें चढ़नेके समय अनेकों बार गांधीजीके साथ कई मजेदार घटनाएं घटीं। कई बार उन्हें खड़ा ही रहना पड़ा, धक्का खाने पड़े, किन्तु यह सब उनके विख्यात होनेसे पूर्व ही हुआ। उन दिनोंतक आप इतने प्रसिद्ध नहीं हुए थे।

तीसरे दर्जेकी परेशानियोंको हम तुम सभी जानते हैं। गांधीजीको भी इन परेशानियोंका कठोर अनुभव था। पहले तो चढ़नेका मौका ही नहीं मिलता यदि किसी प्रकार चढ़ भी जाते तो भीड़के कारण खड़े ही रहना पड़ता था। एक बार आपको किसी प्रकार जगह नहीं मिल रही थी तब आपने एक कुलीको १२ आने पैसे दिये जिसने ठेल-ठालकर, एक खचाखच भरे डब्बेमें घुसा दिया।

एक बार कुम्भके मेलेमें गांधीजी हरद्वार जाना चाहते थे, किन्तु उनकी तीव्र लालसा गुरुकुल कांगड़ीके संस्थापक और अधिष्ठाता महात्मा मुंशीराम (बादमें स्वामी श्रद्धानन्दके नाम से प्रसिद्ध हुए) के दर्शन करने की थी। आप हरद्वारके लिए रवाना हुए पर टिकट तीसरे दर्जेका था। किसी तरह धक्कमधुक्के में चढ़ तो गए पर बैठनेको स्थान नहीं मिला। उस समय लोग गांधीजीको पहचानने लगे थे, अतः उस यात्रामें अधिक कष्ट नहीं हुआ। अन्दरके व्यक्तियोंने जब आपको पहचाना तो आपको सभी सुविधाएं मिल गईं। किन्तु भीड़ने आपको चारों ओर-से घेर लिया तथा अपने कष्टोंको सुनाना और तरह-तरहके प्रश्न करना शुरू किया।

बहुत दिनोंकी बात है, गांधीजी उन दिनों कलकत्तेमें श्री-गोखलेके अतिथि थे। जिस दिन वे कलकत्ता छोड़नेवाले थे उसी दिन श्री गोखले उन्हें स्टेशन गाड़ीपर चढ़ानेके लिये आना चाहते थे, परन्तु गांधीजीने उन्हें मना कर दिया। श्री गोखले बोले,--यदि आप दूसरोंकी भाँति ऊंचे दरजेमें जाते तो मैं कदापि नहीं जाता, आप तीसरे दर्जेमें जायँगे, इसीलिये जा रहा हूं।

बादमें स्वास्थ्य ठीक नहीं रहनेके कारण हर बार वे थर्ड क्लास में सफर नहीं कर पाते थे, इसका उन्हें बड़ा दुःख था।

—o—

गांधीजीका भाषा-ज्ञान

दक्षिण अफ्रीकाकी बात है। मद्रासी मजदूरोंके साथ काम करते हुए गांधीजीको तामिल सीखनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इस तरह उन्होंने तामिल सीखी।

इसी प्रकार जरूरत पड़ जानेके कारण गांधीजीने कई भाषायें सीखीं। विद्यालयमें उन्होंने गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृत सीखी। कानूनकी पुस्तकोंको अच्छी तरह समझनेके लिये लेटिन जानना ज़रूरी है—इस तरह उन्होंने लेटिन भी सीखी। गांधीजी बहुत ही अच्छी हिन्दी जानते थे और गुजराती तो उनकी मातृभाषा ही थी। उनकी गुजराती बहुत ही सुन्दर थी।

जिस समय गांधीजी विलायतमें थे, वहीं उन्होंने फ्रांसकी भाषा फ्रेंच सीखी। दक्षिण अफ्रीकाके अनेक व्यापारी उर्दू बोलते हैं। आवश्यकता पड़नेपर उन्हें समझाने और काम करनेके लिये गांधीजीने उर्दू सीखी।

गांधीजीकी अंग्रेजीके बारेमें एक बार स्वर्गीय दीनबन्धु एण्ड्रूज़ने कहा, गांधीजीकी अंग्रेजी उच्च शिक्षा प्राप्त अंग्रेजकी अंग्रेजी की भांति शुद्ध एवं सुन्दर है तथा ऐसी अंग्रेज़ी भारतवर्षमें बहुत

कम लोग ही लिख सकते हैं। तभी तो गांधीजीकी प्रत्येक रचना का विशेष गुण होता है—सरलता, धारा-प्रवाह एवं माधुर्य। गुजराती में लिखें या अंग्रेजीमें परन्तु उनकी प्रत्येक रचना स्वच्छ और स्पष्ट होती थी। उसे समझनेमें किसीको कष्ट नहीं होता।

गांधीजीने मराठी भी सीखी थी। जिस समय श्री गोखले दक्षिण अफ्रीका गए तब वे वहां मराठीमें भाषण दिया करते थे और गांधीजी उसका अनुवाद कर जनताको समझा दिया करते थे।

बापूके आश्रममें

बाजारसे लौटा तो साढ़े नौ बज चुके थे। जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और गुरुकुल जानेकी तैयारीमें लग गया। घरसे बाहर निकलते ही पोष्टमैनने हाथमें तार पकड़ा दिया। खोलकर पढ़ा तो पिताके शीघ्र ही आनेकी आज्ञा मिली।

छुट्टी लेकर मैं हरद्वारसे जमशेदपुर पहुंचा। काम पूरा करनेमें चौदह दिन लग गए। सोलह दिनोंकी छुट्टी अभी बाकी ही थी। विचार किया कि यह छुट्टी ऐसी जगह बितायी जावे जिससे सारी उम्र याद भी रहे और कुछ फल भी मिले। बापूके सेवाग्राम-से बढ़कर और कोई स्थान उपयुक्त न जँचा।

जहां बापू रहें वह स्थान तो तीर्थस्थान माना जाता था। अतः मैं इस मौकेसे लाभ उठानेके लोभको न दबा सका। टाटानगरसे वर्धाका टिकट भी मिल गया और बम्बई-मेलसे मैं रवाना हुआ।

विलासपुर, जबलपुर पार करते हुए मेरी गाड़ी नागपुर पहुंची। गाड़ीके रुकते ही सादी वर्दीमें सी० आई० डी० के इन्सपेक्टर मेरे पास आये और तरह-तरहके उल्टे-सीधे प्रश्न किए। यू० पी० का रहने वाला हूँ, आ रहा हूँ बिहार (जमशेदपुर) से और जा रहा हूँ वर्धा, वह भी आन्दोलनके जमानेमें! वे महाशय इसी गुत्थीको सुलझानेमें लगे रहे और वे बाहर प्लेटफार्मपर खड़े-खड़े मुझे नीचे उतर आनेके लिये कहते रहे। गुरुकुलमें सभी शुद्ध हाथकी कती खादी पहनते हैं और निर्भीकता पूर्वक स्वच्छन्द मन मुताबिक घूमते हैं।

मैं भी अपनी खादीकी पोशाकमें बेफिक्र था, आंखोंपर चश्मा और सिरपर सफेद गांधी टोपी थी। शायद उन्हें मेरे क्रांतिकारी होनेका सन्देह हो रहा था। गाड़ीके लोग कौतूहलकी दृष्टिसे मेरी ओर देख रहे थे। और उन्हें यही विश्वास था कि मैं अब गिरफ्तार हुए बिना नहीं बच सकता। किन्तु मेरे भाग्यमें तो सेवाग्रामकी तीर्थयात्रा लिखी थी। मैं किसी प्रकार भी नीचे उतरनेको राजी नहीं था और उतरा भी नहीं। मेरी नोटबुक देखकर ज्योंही मुझे वापिस दी कि गाड़ी चल पड़ी और वे ताकते रह गये। उन्हें ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिसके बलपर वे मुझे गिरफ्तार करते।

वर्धा पहुँचे तो सांझ हो चुकी थी। पूछ-ताछ करनेपर मालूम हुआ कि सेवाग्राम वहांसे ५ मीलपर है। बाहर आकर एक तांगे वालेको बुलाया और सेवाग्राम चलनेके लिये कहा। पर उसने एकदम ढाई रुपये मांगे। दिल्ली और हरद्वारसे भी मंहगा किराया !

मैंने पैदल ही वर्धामें प्रवेश किया। सांझके समय वर्धाकी अपूर्व छटा थी। वहींकी एक धर्मशालामें मैं टिक गया।

तेरह वर्ष पहले गांधीजी इस गांवमें जा बसे थे। वहाँ उन्होंने अपना आश्रम स्थापित किया और उसका नाम 'सेवाग्राम-आश्रम' रक्खा। बादमें बापूने बदलकर केवल 'सेवाग्राम' रख दिया।

प्रातःकाल उठकर स्नान आदिसे निपट मैं पैदल ही सेवाग्रामकी ओर चल पड़ा। रास्तेमें ग्राम-उद्योग-संघ, राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा,

महिला विद्यापीठ तथा 'सर्वोदय' कार्यालय आदि संस्थायें पड़ीं। सन् ४२ के आन्दोलनसे सभी बन्द थीं उन्हें मैं न देख सका।

मैं चला जा रहा था। बांस-फूसकी झोपड़ियों वाले बापूके ग्रामको देखनेकी इच्छा तीव्र थी और कदम पूरी तेजीसे उठ रहे थे।

सेवाग्राममें प्रवेश करते ही मन बाँसों उछल रहा था, खुशी मुँहपर मुस्कान बनकर खिल उठी। आनन्द विभोर हो उछलता सा बढ़ता जा रहा था। बापूकी नगरीमें प्रवेश करते ही मैंने समझा मानों मैंने अपना कोई सर्वोत्तम कर्त्तव्य निभाया हो।

खादी-महाविद्यालय अभी पूरा नहीं बना था। आगे गोपुरी और फिर बुनियादी-तालीमी-संघ, रुस्तम भवन और बिड़लाजी की कोठी तथा डाकघर मिला। कुल मिलाकर लगभग डेढ़सौ घरोंकी बस्ती होगी। अधिक हरिजन ही हैं।

सौभाग्यसे वहीं मुझे अपने एक परिचित सज्जन मिल गये। एक बार वे गुरुकुल (कांगड़ी) देखने हरद्वार पधारे थे, तभीसे मित्रता हो गई है। एक-दूसरेको वहाँ देख हम चकित रह गये। साथ ही खुशी भी हुई। बातचीतसे पता चला कि एक महीनेसे वे सेवाग्राममें हैं वे मुझे प्रोफेसर जयकृष्ण भंसालीसे मिलने 'सेवाग्राम-आश्रम-विभाग' में ले गये। प्रो० भंसाली बड़े कमजोर हो रहे थे। उन्होंने चिमूर-कांडके लिये ६१ दिनका उपवास किया था। मेरे मित्रने बताया कि प्रो० भंसाली बराबर चर्खा चलाते हैं। रातमें भी देर तक चर्खा

चलाते हैं या रूई धुनते हैं। सोते तो बहुत कम हैं और भोजनमें गाजर अधिक खाते हैं। इसके बाद वे मुझे बापूकी झोपड़ी दिखाने ले गये जो दूसरी झोपड़ियोंसे सादी, मामूली और साफ थी। कमरेमें कई चित्र और मिट्टीकी मूर्तियाँ तथा महात्मा ईसाका भी एक चित्र था।

इसी समय खानेकी घंटी बजी और—वे मुझे ले वहाँ पहुँच गए। मुझे भी थाली, कटोरा, चम्मच और गिलास मिला और उन्हींके साथ भोजन करने बैठ गया।

'सहनाववतु। सहनौभुनक्तु। सहवीर्यं करवाव है। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।' मंत्रका एक स्वरसे उच्चारण किया। गुरुकुलके ब्रह्मचारी, निवासी तथा हम सभी इस मंत्रको उच्चारणके बाद भोजन करते हैं। मुझे मंत्र याद था इसलिये मैंने केवल भोजनमें ही नहीं मंत्रके उच्चारणमें भी सबका साथ दिया। भोजनके बाद लोग अखबार पढ़ने लगे। समयकी कमीके कारण कभी-कभी तो बापू पाखानेमें भी अखबार पढ़ा करते थे। वहाँके पाखाने भी रसोई घरकी भाँति ही साफ थे। कूड़ा-कर्कट जहाँ-तहाँ नहीं फेंका जाता। दातूनकी कूंची भी साफ करके लोग एक जगह इकट्ठी कर देते हैं जो बादमें जलावनके काममें लाई जाती है। सड़कें पक्की हैं और कहीं ढूँढ़नेपर भी गन्दगी नहीं मिलती।

मेरे दुर्भाग्य थे बापूके दर्शन न हो सके। बापूके साथ सभी नेता जेल की चहारदिवारीमें बन्द थे। मेरा तीर्थ अधूरा रहा।

महामानवके अमर बोल

१—सत्य ही ईश्वर है और उसीके निर्देशसे हमारा पथ प्रदर्शन होता है।

२—सत्य वह है जो है, और पाप वह है जो नहीं है। हिन्दू धर्म सत्यका धर्म है और सत्य है परमेश्वर। सत्यके सिवा और कोई ईश्वर नहीं।

३—आवेश और क्रोधको वशमें कर लेनेसे शक्ति बढ़ती है और आवेशको आत्मबलके रूपमें परिवर्तित किया जा सकता है।

४—ईश्वरसे डरनेवाला व्यक्ति मृत्युसे भयभीत नहीं होता।

५—पराजयसे सत्याग्रह और अहिंसकको निराशा नहीं होती, उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढ़ती है और सत्यसे ही मनुष्यकी बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है।

६—शांतिपूर्ण, दृढ़प्रतिज्ञ तथा ईश्वरसे डरनेवाले मनुष्यके सामने संसारकी कोई शक्ति ठहर नहीं सकती। अहिंसा संसारके सभी शस्त्रोंसे बलशाली है।

७—सच्ची सुन्दरता तो हृदयकी पवित्रतामें है और इसलिये मैं ऐसी कला और ऐसा साहित्य चाहता हूं जो करोड़ोंसे और करोड़ोंकी ओरसे बोल सके।

८—प्रेमी दूसरेको नहीं जलाता, वह स्वयं अपनेको जलाता है, यहाँ तक कि मौतको भी गले लगाता है। वह मनसा, वाचा, कर्मणासे किसीके शरीरको भी चोट नहीं पहुँचाता।

९—मैं चाहता हूँ कि भारत यह अनुभव करे कि उसकी आत्मा अमर है शारीरिक कमजोरियोंसे ऊँचे उठकर वह समस्त विश्वको अपनी आत्मिक प्रतिभा और अहिंसासे प्रभावित कर दे। अहिंसाके उपदेश तो जरथुस्त, महावीर, डैनियल, ईसा, मोहम्मद, नानक, बुद्ध, दयानन्द और अनेकों अन्य महान विभूतियों द्वारा दिये गये हैं।

१०—सत्याग्रही अपना प्रत्येक कदम उठाते समय अपने प्रतिद्वन्दीका ध्यान रखता है। वह सदा उसके प्रति विनम्र तथा दयालु रहता है, यद्यपि वह उसके अधमपूर्ण कानूनों तथा आदेशों को नहीं मानता।



बापूके जीवनकी झांकियां

१८६९-२ अक्टूबर, वृहस्पतिवार, काठियावाड़के पोरबन्दर में एक वैश्य कुलमें शिशुमोहनदास करमचन्द गांधीका जन्म।

१८७६-लगभग ५ वर्षकी आयुमें विद्यारम्भ। गोकुलदास माकनदासजीकी पुत्री कस्तूरबाके साथ सगाई।

१८८३--प्रायः १४ वर्षकी आयुमें विवाह।

१८८४-८५ में छिपकर गोश्त खाना शुरू किया, किन्तु एक वर्ष बाद ही मांस खाना छोड़ दिया।

१८८७--मैट्रिक परीक्षामें उत्तीर्ण हुए। भावनगरके साँवल-दास कालेजमें भर्ती हुए। किन्तु एक वर्ष पश्चात पढ़ना छोड़ दिया।

१८८८-पुत्र उत्पन्न हुआ। बैरिष्टरी पढ़नेके लिये विलायत रवाना हुए। विलायतमें आपने निरामिष रहकर विद्याध्ययन किया।

१८९१-बैरिष्टर होकर भारत लौटे।

१८९३-कानूनी पैरवीकारकी हैसियतसे दक्षिण अफ्रीका गये।

१८९४-आप प्रथम भारतीय थे जिन्होंने यहाँ वकालत करनेके लिये नैटालके सर्वोत्तम न्यायालयमें एडवोकेटकी तरह अपना नाम दर्ज कराया।

१८९५-दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंकी दयनीय दशाको देखकर उनकी रक्षाके लिये महान संघर्षमें व्यस्त रहे और नैटाल भारतीय कांग्रेसकी स्थापना की।

१८९६-भारत लौटकर भारतीय नेताओंको दक्षिण अफ्रीका स्थित भारतीयोंकी दुर्दशाका हाल सुनाया। नवम्बरमें पत्नी और बच्चेके साथ फिर दक्षिण अफ्रीकाके लिये रवाना हुए।

१८९७--१३ जनवरीको इनके डरबन पहुँचते ही इनपर आक्रमण किया। गोरे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी स्त्रीने प्राण रक्षा की।

१८९९-बोअर युद्धके लिये ऐम्बुलेंस दलका संगठन किया और भारतीयोंकी सहायतासे अंग्रेजोंकी मदद की।

१९०१-पुनः भारत लौट आये।

१९०२-ट्रांसवालमें एशियायी कानूनके विरुद्ध भारतीयोंकी आवाज बुलन्द की।

१९०३-'ट्रांसवाल ब्रिटिश-इण्डियन एसोशियेशन' स्थापित किया और 'इण्डिया ओपीनियन' स्थानीय साप्ताहिकका सम्पादन किया।

१९०६-जुलू विद्रोहके समय घायलोंकी सेवा की।

१९०७-'एशिया विरोधी कानून'के खिलाफ सत्याग्रहकी प्रतिज्ञा की।

१९०८-जोहांसवर्गमें गिरफ्तार होनेपर दो महीनेकी सख्त सजा मिली। जनरल स्मट्ससे समझौता और रिहाई। पठानों द्वारा पीटे गये। आक्रमणकारियोंपर अभियोग चलानेसे इन्कार कर दिया।

१९१२-विदेशी पहनावेका त्याग किया और केवल फलाहार पर रहना प्रारम्भ किया। गोखलेको दक्षिण अफ्रीका बुलाया।

१९१३-सत्याग्रह किया। गिरफ्तार हो गये और नौ महीनेकी सजा मिली, फिर बादमें बिना शर्त रिहा कर दिये गये।

१९१४-गोखलेसे मिलने लन्दन पहुँचे।

१९१५-कवि गुरु रवीद्रनाथ ठाकुरका "महात्मा गांधी" सम्बोधित पत्रकी प्राप्ति। अहमदाबादमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना जो बादमें साबरमती आश्रमके नामसे विख्यात हुआ। बर्माकी यात्रा की। रेलगाड़ीके तीसरे दर्जेमें ही चलनेका निश्चय किया।

१९१६-काशी विश्वविद्यालयकी स्थापनाके समय राजाओंको फटकार। लखनऊ कांग्रेसमें पण्डित जवाहरलाल नेहरूसे प्रथम भेंट।

१९१७-पटनेमें डा० राजेन्द्रप्रसादसे पहली भेंट। चम्पारन आन्दोलनमें पहली गिरफ्तारी।

१९१८-पटेल बन्धुओंसे प्रथम मिलन। अहमदाबादके मजदूरोंके लिये आंदोलन कर उनकी मजदूरी बढ़वाई। रंगरूटोंकी भर्तीमें हाथ बटाया।

१९१९-रौलट बिलके विरोधमें सत्याग्रह। देशव्यापी सत्याग्रह जारी किया। चारों ओर हड़तालें हुईं। दिल्ली, लाहौर और अमृतसरमें जुलूसोंपर गोलियाँ चलीं। महात्माजी पंजाब जाते समय

गिरफ्तार कर लिये गये जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप कई स्थानों पर दंगे हुये। इस समय कुछ हिंसात्मक कार्यवाहियाँ हुईं। १३ अप्रेल को जलियाँवाला बागका घृणित हत्याकाण्ड हुआ। बीस हजार निहत्थे हिन्दुस्तानी जनरल डायरकी गोलियोंके शिकार बने। फलस्वरूप १४ अप्रेलको साबरमती आश्रममें तीन दिन तक उपवास किया। १८ अप्रेलको सत्याग्रह बन्द किया गया। पं० मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दाससे विशेष बातें हुईं।

१६२०-मौलाना आजादसे भेंट। कैसरे-हिंदकी उपाधि त्याग दी। देशमें अपूर्व जागृति हुई। भिन्न स्थानोंपर विदेशी कपड़ोंकी होली जलाई गई।

१६२१-कांग्रेसके १ करोड़ सदस्य बने। प्रिंस आफ वेल्सके भारत आनेके कारण दंगे और रक्तपात हुए। ५ दिनों तक अनशन किया।

१६२२-नेताओंका सम्मेलन। वायसरायको चुनौती। चौरी-चौरा हत्याकाण्डके विरुद्ध अनशन किया। ३० हजार व्यक्ति जेलमें ठूंसे गये। गांधीजीको ६ वर्षकी सजा।

१६२४-जेलसे रिहाई। कांग्रेसके सभापति चुने गये।

१६२५-चर्खासंघकी स्थापना।

१६२६-वायसरायसे मुलाकात। ३१ दिसम्बरको पूर्ण स्वतन्त्रताकी घोषणा।

१६३०-२६ जनवरी पूर्ण स्वतंत्रता दिवस। ७६ स्वयंसेवकोंके साथ दण्डीके लिये प्रस्थान। दो सौ मील पैदल चलकर समुद्रके किनारे दण्डी पहुंचे और नमक सत्याग्रह किया। आप गिरफ्तार किये गये और साथ ही १ लाखसे अधिक व्यक्ति जेल गये।

१६३१-कांग्रेसके नेता जेलसे मुक्त। गांधी-इरविन समझौता। कांग्रेसके प्रतिनिधि बनकर गोलमेज परिषदमें सम्मिलित हुये। युरोपमें मुसोलिनी और रोभाँरोलासे मिले।

१६३२–४ जनवरीको गिरफ्तार कर लिये गये।

१६३३-६ मईको रिहाई। ३१ जुलाईको फिर गिरफ्तार। हरिजन पत्रका प्रकाशन। २३ अगस्तको रिहाई।

१६३४-कौंसिल प्रवेशका निश्चय। १७ सितम्बरको कांग्रेससे अलग।

१६३५-हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति।

१६३६-वर्धाके निकट सेवाग्रामकी स्थापना।

१६३६-राजकोटमें अनशन।

१६४०-रामगढ़ कांग्रेस। अंग्रेजोंको युद्धमें मदद नहीं देनेका निर्णय।

१६४२-क्रिप्ससे बातचीत। "अंग्रेजों भारत छोड़ो"का नारा। ८ अगस्तको बम्बईमें भाषण। ६ अगस्तको गिरफ्तारी। देश भरमें विद्रोह मच गया।

१६४४-२२ फरवरीको कस्तूरबाका निधन। ५ मईको बिना शर्त छोड़ दिये गये। जिन्नासे बातचीत। २ अक्टूबरको १० लाखकी थैली भेंट।

१६४६-केबिनेट मिशन। बंगालमें दंगे और गांधीजीकी नोआखाली यात्रा। फिर बिहारमें दंगे और बिहारका दौरा।

१६४८-१३ जनवरीको साम्प्रदायिक दंगेका अंत करनेके लिये ५ दिन तक अनशन किया। २० जनवरीको आपकी हत्याकी चेष्टा की गई। आपने अपराधीको क्षमा कर दिया।

३० जनवरी गांधीजीका अन्तिम दिन। प्रार्थना सभामें जाते हुये ३६ वर्षीय शिक्षित मराठी युवक नाथूराम विनायक गोडसेने सन्ध्या ५ बजे आपको गोली मारी। ३५ मिनट बाद देहावसान हुआ। अंतिम क्षणमें मुँहसे 'राम' निकला।

अपने ध्येय और धर्मपर शहीद होने वाले महापुरुष

(१) सुकरात-ग्रीक देशका दार्शनिक जिसने ईसाके ३९९ वर्ष पूर्व विष पान किया।

(२) ईसा-आजसे १९१६ वर्ष पूर्व ३३ वर्षकी उम्रमें शूलीपर चढ़ाये गये।

(३) अब्राहमलिंकन-अमेरिकाके सभापति जो १४ अप्रेल १९१८ में गोलीके शिकार हुये।

(४) लेनिन-२० अगस्त १९१८ में गोलीका शिकार होकर लगभग ६ वर्ष पश्चात् १९२४ में मरे।

(५) माइकलकालिंस-१९२२ ई० में मार डाले गये।

(६) महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी-३० जनवरी १९४८ गोली से मार डाले गये।

—०—